Navchetana Homilies

Oct 13, 2019

Dt 11:26-32

Is 41:1-7

Gal 5:16-26

Lk 8:41b-56

एलियास–सलीब–मूसा काल का छटवाँ रविवार

ख्रीस्त में प्रिय विश्वासियों, द्वितीय वटिकान महासभा में इस बात पर जोर देकर कहा गया था कि हर एक ख्रीस्तीय एक धर्मप्रचारक अथवा मिशनरी है और यात्री कलीसिया स्वभाव से मिशनरी है। एक दिन हिटलर ने अपने श्रोताओं से पूछा की हमारे देश की उन्नती के लिए आप लोगों ने क्या किया है? क्या कर रहे हैं? और क्या करने वाले हैं? उन्होंने उत्तर दिया "इस देश को आगे बढ़ाने के लिए हम जीयेंगे साथ ही साथ मरेंगे भी।" जो प्रश्न हिटलर ने अपने अनुयायियों से पूछा था, वही प्रश्न अगर ईश्वर आज हमसे पूछे कि ख्रीस्तीय विश्वास जो अनेक संतों ने अपना जीवन कुर्बान करके हमें दिया है,

उस विश्वास के लिए आपने क्या किया है? क्या कर रहे हैं? और क्या करने वाले हैं? रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है "यदि आप ख्रीस्तीय लोग ख्रीस्त की तरह अपना जीवन जीये तो सारा संसार आपके चरणों में होगा" इसी प्रकार का जीवन जीने के लिये सबसे पहले हमें प्रभु येसु पर अटल विश्वास रखना चाहिए, प्रभु के वचनों पर विश्वास रखना चाहिए।

आज का सुसमाचार भी हमें विश्वास के बारे में अवगत कराता है। जैरूस और रक्तस्त्राव पीडिता के विश्वास के साथ हमें मृत्यु और रोग दोनों के ऊपर ईसा मसीह का अधिकार देखने को मिलता है। रक्तस्त्राव से पीड़ित स्त्री के विवरण के लोग और जैरूस के घर में विलाप करने वाले ,दोनों अलग नहीं हैं क्योंकि उन्होंने ईसामसीह की शक्ति पर विश्वास नहीं किया और वह ईसामसीह की हँसी उड़ाते रहे। जब रक्तस्त्राव पीड़िता ने ईसा को स्पर्श किया तब ईसा से शक्ति निकली और जब ईसा ने जैरूस की बेटी को स्पर्श किया तब उसमें जीवन आया। जीवन और शक्ति दोनों का स्त्रोत ईश्वर है।

जैरूस सभागृह का अधिकारी था उसकी तुलना में रक्तस्त्राव पीड़िता कुछ भी नहीं थी। 12 साल से वह रक्तस्त्राव से पीड़ित थी। वह समूह से अलग की गयी थी। कोई उसकी परवाह नहीं करता था। लेकिन येसु जैरूस की अपेक्षा उस स्त्री को अधिक महत्व देते हैं। ईसा उसके

दुःख–दर्द को समझ लेते हैं। येसु जैरूस के घर जाते समय उस स्त्री से बातचीत करने के लिए समय निकालते हैं। हममें से कौन ऐसा व्यक्ति होगा? कि जब हम किसी विशिष्ट व्यक्ति के कुछ महत्वपर्ण कार्य के लिये जाते हैं तो रास्ते में पड़े लाचार या गरीब के साथ बात करते हैं या उसकी आवश्यकता पूर्ती के लिए तैयार होते हैं? ईश्वर के सामने सब बराबर हैं। ईश्वर सबकी देखभाल करते हैं, बस हमें उन पर अटल विश्वास करना है। यहूदीयों का मानना है कि जिस पर ईश्वर की शक्ति है उनके कपड़ों में से चंगाई की शक्ति निकल सकती है। जैसे प्रेरित चरित में हम पढ़ते हैं। "लोग रोगियों को सड़कों पर लाकर खटोलों तथा चारपाइयों पर लिटा देते थे ताकि जब पेत्रुस वहाँ से गुज़रे तो उनकी छाया उन पर पड़ जाये। (प्रेरित चरित 5,15)

सुसमाचार की दूसरी घटना में हम देखते हैं जैरूस जो सभागृह का अधिकारी हैं, ईसा के समक्ष दण्डवत् होकर उनसे निवेदन करता है कि वह उसके यहाँ चलने की कृपा करें। जैरूस का आगमन अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि जब यहूदी लोग ईसा के विरूद्ध षडयंत्र रचते हैं तब भी एक सभागृह का अधिकारी ईसा के सामने आकर दण्डवत् करता है। आज हमें इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि जैसे जैरूस ने ईसा के सामने दण्डवत् किया उसी प्रकार अनेक अख्रीस्तीय लोग ईसा

के मार्ग को अपनाते हैं, उनके सामने दण्डवत् करते हैं और ईश्वर उन्हें भरपूर मात्रा में आशिष देते हैं। हम भी प्रतिज्ञा करें कि हम भी दूसरों के साथ ईश्वर के प्रेम को बाँटेंगे और अनेक लोगों को ईश्वर के चरणों में लाने की कोशिश करेंगे।

जब ईसा रास्ते में थे तब जैरूस के घर से किसी ने आकर कहा आपकी बेटी मर गयी। अब आप गुरूवर को कष्ट न दीजिए। उस भृत्य को ईसा की शक्तियों के बारे में ज्ञान नहीं था। वह नहीं जानता था के मृत्यु और रोग दोनों के ऊपर ईसा का अधिकार है। कभी–कभी हम भी उस भृत्य के समान बन जाते हैं की जब हमारे सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ती नहीं होती है, तब ईश्वर पर हमारा जो विश्वास हैं वह खो जाता हैं। कभी–कभी हम भी पेत्रूस के समान ईसा को अस्वीकार करते हैं। कोई भी अवस्था में हो हमारा विश्वास योब की तरह होना चाहिए। योब ने कहा "सब कुछ ईश्वर ने दिया, सब कुछ ईश्वर ने वापस ले लिया।"

सुसमाचार में हम येसु को दूसरों के दुःख और दर्द में भाग लेने वाले के रूप में देखते हैं। रक्तस्त्राव पीड़िता हमारे समूह के ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो कई सालों से अनेक प्रकार की बीमारी से पीड़ित हैं, जो लोग रोग के कारण दुःख या दर्द सहते हैं उनके सामने प्रभु येसु हैं, जो हमारे दुःख और दर्द को समझते हैं और हमारे कष्ट मिटाने के लिए सदा

तत्पर हैं। वहीं येसु ख्रीस्त पर हमें दृढ़ आस्था रखना चाहिए। जो लोग समूह से बहिष्कृत हों, अलग–अलग कारणों से परिवार में या समूह में यातनायें सहते हों येसु उन्हें ढूँढते हैं, और प्यार करते हैं। येसु का प्रेम कितना अपार है। जो अनेक कारणों से तनाव में जीवन व्यतित करते हों या गलतफहमी के

कारण दूसरों के द्वारा आरोप सहते हो उनके बीच से हर दिन येसु गुज़रते हैं। क्या हम विश्वास करते हैं कि येसु हमें उन सब अवस्थाओं से मोचन दे सकता है? क्या हम विश्वास के साथ ईसा की चादर का पल्ला छूने के लिए तैयार हैं? अगर हम तैयार हैं तो वह जरूर हमें हमारे कष्टों और दुःखों से निकाल देगा।

प्यारे भाईयों और बहनों दूसरों के साथ येसु का प्यार बाँटने के लिये, संसार को एक नई दिशा देने के लिये, एक प्रेरित बनने के लिये, हमें ईश दर्शन की आवश्यकता है। हमें ईश प्रेम का अनुभव होना जरूरी हैं। आज के इस मिस्सा बलिदान में हम ख्रीस्त के वचनों को दूसरों तक पहूँचाने का संकल्प करें, जिससे हमारे जीवन द्वारा लोग ख्रीस्त एवं उनके वचनों के नज़दीक आ सकें। साथ ही साथ आज हम विशेष रूप से उनके लिये प्रार्थना करें जिन्हें प्रभु ने विशेष रूप से सुसमाचार के प्रचार के लिए बुलाया है जिससे वह पूर्ण शक्ति के साथ

अपने जीवन के उदाहरण द्वारा ख्रीस्त के संदेश को दूसरों तक पहूँचा सकें।

Fr. Liby Puthenveet